Academic Council: Date 26 / 04 / 2010, R. No.: (2)
Executive Council: Date 07 / 05 / 2010, R. No.: (3)

BHAVNAGAR UNIVERSITY

BHAVNAGAR

(NACC Accreditation Grade "B")

CREDIT AND SEMESTER SYSTEM

SYLLABUS

MASTER OF ARTS (M.A.)

HINDI

(In Force From Academic Year: 2010-2011)

M.A.

Credit and Semester System Syllabus

NAME OF THE SUBJECT: HINDI

SEMESTER – 1st

SR. NO.	PAPER NO.	NAME OF THE PAPER	TOTAL MARKS EXT+INT=TOTAL	PASSING STANDARD EXT+INT= TOTAL	TOTAL TEACHING HOURS	CREDITS
1	1	आधुनिक हिन्दी काव्य (भारतेन्दु युग से छायावाद युग तक)	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
2	2	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदकिाल से रीतिकाल तक)	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
3	3	आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य – (कथा साहित्य)	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
OR						
3	3-A	जन संचार माध्यम लेखन (वैकल्पिक)	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
4	4	हिन्दी भाषा और लिपि	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05

* INTERNAL	MARKS
ASSIGNMENT	10
SEMINAR	10
TEST	10

M.A.

Credit and Semester System Syllabus

NAME OF THE SUBJECT: HINDI

SEMESTER – 2nd

SR. NO.	PAPER NO.	NAME OF THE PAPER	TOTAL MARKS EXT+INT=TOTAL	PASSING STANDARD EXT+INT= TOTAL	TOTAL TEACHING HOURS	CREDITS
1	5	आधुनिक हिन्दी काव्य (छायावादोत्तर कविता)	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
2	6	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
3	7	आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य (नाटक एवं निबन्ध)	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
OR						
3	7-A	प्रयोजनमूलक हिन्दी (वैकल्पिक)	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
4	8	भाषा विज्ञान	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05

* INTERNAL	MARKS
ASSIGNMENT	10
SEMINAR	10
TEST	10

M.A.

Credit and Semester System Syllabus

NAME OF THE SUBJECT: HINDI

SEMESTER – 3rd

SR. NO.	PAPER NO.	NAME OF THE PAPER	TOTAL MARKS EXT+INT=TOTAL	PASSING STANDARD EXT+INT= TOTAL	TOTAL TEACHING HOURS	CREDITS
1	9	पूर्व मध्यकालीन हिन्दी काव्य	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
2	10	विशेष रचनाकारों का अध्ययन	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
OR						
2	10-A	अनुसंधान की प्रविधि व प्रक्रिया (वैकल्पिक)	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
3	11	भारतीय काव्य शास्त्र एवँ हिन्दी आलोचना	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
4	12	जन संचार माध्यम	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05

* INTERNAL	MARKS
ASSIGNMENT	10
SEMINAR	10
TEST	10

M.A.

Credit and Semester System Syllabus

NAME OF THE SUBJECT: HINDI

SEMESTER – 4th

SR. NO.	PAPER NO.	NAME OF THE PAPER	TOTAL MARKS EXT+INT=TOTAL	PASSING STANDARD EXT+INT= TOTAL	TOTAL TEACHING HOURS	CREDITS
1	13	उत्तर मध्यकालीन हिन्दी काव्य	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
2	14	विशेष रचनाकारों का अध्ययन	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
3	14-A	लघुशोध प्रबन्ध लेखन (वैकल्पिक)	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
OR						
4	15	पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवं विभिन्न वाद	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05
5	16	दृश्य–श्रव्य माध्यम में हिन्दी भाषा साहित्य का अनप्रयोग	70 + 30 = 100	28 + 12 = 40	15 Weeks x 05 Hours = 75	05

* INTERNAL	MARKS
ASSIGNMENT	10
SEMINAR	10
TEST	10

एम.ए. (हिन्दी)

सेमेस्टर–१

प्रश्नपत्र – १ : आधुनिक हिन्दी काव्य (भारतेन्दु युग से छायावाद युग तक)

प्रतिपाद्य: नवजागरण काव्य से हिन्दी की आधुनिक कविता में विश्व एवं भारत के सामाजिक नवसंस्थान का निरुपण पाया जाता है । यह कविता अतीत का गौरवपूर्ण गान तथा वैभवपूर्ण सांस्कृतिक विरासत को अभिव्यक्त करती है । अत: इसका अध्ययन आवश्यक है ।

युनीट – १ : भारतेनदु युगीन काव्यकृति – 'प्रिय प्रवास' – हरिऔध । १५ घंटे १४ अंक

- १.१ रचनाकार व्यकितत्व – कृतित्व ।
- १.२ कृति का स्वरुपगत एवं कथ्यगत सघन अध्ययन ।
- १.३ कृति का कथ्य के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन ।
- १.४ कृति का शिल्प के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन ।

युनीट – २ : द्विवेदी युगीन काव्यकृति – विष्णुप्रिया – मैथिलीशरण गुप्त । १५ घंटे १४अंक

- २.१ द्विवेदी युगीन कविता परिवेश – प्रवृत्तियाँ ।
- २.२ रचनाकार व्यकितत्व – कृतित्व ।
- २.३ 'विष्णुप्रिया' का कथ्य के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन ।
- २.४ वष्णुप्रिया' का शिल्प के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन ।

युनीट – ३ : छायावाद युगीन काव्य । १५ घंटे १४ अंक

- ३.१ सरोज स्मृति – निराला । छायावाद युगीन काव्य परिवेश – प्रवृत्तियाँ ।
- ३.२ निराला व्यकितत्व – कृतित्व ।
- ३.३ 'सरोज स्मृति' का संवेदना मूलक अध्ययन ।
- ३.४ 'सरोज स्मृति' का कला मूलक अध्ययन ।

युनीट – ४ : उकत तीन काव्य ग्रंथों से ससन्दर्भ व्याख्या । १५ घंटे १४ अंक

- ४.१ 'प्रिय प्रवास' से ससन्दर्भ व्याख्या
- ४.२ 'प्रिय प्रवास' से ससन्दर्भ व्याख्या
- ४.३ 'विष्णुप्रिया' से ससन्दर्भ व्याख्या
- ४.४ 'सरोज स्मृति' से ससन्दर्भ व्याख्या

युनीट – ५ : उकत पाठ्यक्रम से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । १५ घंटे १४ अंक

- ५.१ बहु विकल्प ।
- ५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
- ५.३ एक वाक्य में उत्तर ।
- ५.४ जोड़ मिलाएँ ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

पाठ्य पुस्तकें

१. प्रिय प्रवास – अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध प्रकाशक :

२. विष्णु प्रिया – मैथिलीशरण गुप्त प्रकाशक : जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

३. सरोज स्मृति – सुर्यकान्त त्रिपाठी – निराला ।

संदर्भ ग्रंथ

१. निराला काव्य में सांस्कृतिक चेतना – जगदीशचंद्र, प्रकाशक : भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली ।

२. आधुनिक हिन्दी काव्य में पौराणिक चेतना का समाहार – डॉ. जया पाठक, प्रकाशक : भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली ।

३. छायावादी कवियों का सौदर्य विधान – डॉ. दीक्षित, प्रकाशक – भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली ।

४. छायावादी काव्य और महादेवी वर्मा, डॉ. एच.एन. वाघेला, भावना प्रकाशन, पटपटगंज, नई दिल्ली ।

प्रश्नपत्र – २ : हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदकिाल से रीतिकाल तक)

प्रतिपाद्य: साहित्येतिहास का अनुशीलन विश्व के परिपूरक वितरण में भारतीय राष्ट्र की सांस्कृतिक अस्मिता को परिभाषित करता है । आठवीं नवी शती से प्रारंभ हिन्दी साहित्य की सृजनधर्मिता सत्रहवी शताब्दी तक भारतीय धर्म साहित्य एवं सौंदर्यमूलक साहित्य को काव्यात्मक स्वरुप में अभिव्यक्त करती है । इसके अध्ययन से भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक एवं धार्मिक अस्मिता का दर्शन होता है । अत: छात्रों के सुरुचि के प्रोत्साहन हेतु ऐतिहासिक निदर्शन का मौलिक प्रतिपाद्य है ।

युनीट – १ : साहत्यितिहास संकल्पना । १५ घंटे १४ अंक

१.१ साहित्येतिहास अर्थ – स्वरुप ।
१.२ साहित्येतिहास परंपरा ।
१.३ साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ व समाधान ।
१.४ प्रमुख साहित्येतिहास संक्षिप्त परिचय ।

युनीट – २ : हिन्दी साहित्य का आदिकाल । १५ घंटे १४ अंक

२.१ आदिकाल पूर्व का साहित्य ।
२.२ आदिकालीन परिस्थितियाँ – प्रवृत्तियाँ ।
२.३ आदिकाल के प्रमुख रासो ग्रंथ ।
२.४ पृथ्वीराज रासो का संक्षिप्त परिचय ।

युनीट – ३ : हिन्दी साहित्य का पूर्व मध्यकाल । १५ घंटे १४ अंक

३.१ पूर्व मध्यकालीन परिस्थितियाँ व प्रवृत्तियाँ ।
३.२ भक्ति काव्य वैज्ञानिक विभाजन ।
३.३ सगुण भक्ति काव्यधारा प्रमुख सर्जक – सर्जन ।
३.४ निर्गुण भक्ति काव्यधारा प्रमुख सर्जक – सर्जन ।

युनीट – ४ : हिन्दी साहित्यका उत्तर मध्यकाल । १५ घंटे १४ अंक

४.१ उत्तर मध्यकालीन परिवेश व प्रवृत्तियाँ
४.२ रीतिकाव्य परंपरा, लक्ष्यग्रंथ, लक्षणग्रंथ
४.३ रीतिकाव्य के प्रकार : सिद्ध, बद्ध, मुक्त
४.४ तीन धाराएँ – रीति सिद्ध, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त प्रमुख सर्जक व रचनाएँ

युनीट – ५ : उकत पाठ्य वस्तु से वस्तुनिषठ प्रश्न । १५ घंटे १४ अंक

५.१ बहु विकल्प प्रश्न ।
५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
५.३ जोड़ मिलाएँ ।
४.४ एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

संदर्भ ग्रंथ

१. साहित्य का इतिहास दर्शन – नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा इतिहास परिषद, पटना ।
२. साहित्य और इतिहास दृष्टि – मेनेजर पांडे, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
३. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
४. हिन्दी साहित्य की भूमिका, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
५. हिन्दी साहित्य का उद्‌भव विकास, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
६. रीति काव्य की भूमिका, डॉ. नगेन्द्र, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
७. हिन्दी साहित्य का अतीत भाग–१–२, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी ।
८. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की इतिहास दृष्टि, नरेन्द्रपाल शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।
९. हिन्दी साहित्य के इतिहासों का इतिहास, डॉ. किशोरीलाल गुप्त, विभु प्रकाशन साहिबाबाद ।
१०. हिन्दी साहित्येतिहास : परंपरागत दृष्टिकोण एवं नए सिद्धांत, गणपतिचंद्र गुप्त ।

प्रश्नपत्र – ३ : आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य – (कथा साहित्य)

प्रतिपाद्य: आधुनिक हिन्दी गद्य विगत एक शताब्दी की विकास परंपरा की अभिव्यक्ति है । भारतीय जनजीवन के विविधोन्मुखी आयामों को समेटते हुए निरंतर राष्ट्रीय आकांक्षाओं की यथार्थ अभिव्यंजना है । इसका कथा साहित्य आदर्श, यथार्थ, आदर्शोन्मुखी यथार्थ, मनोवैज्ञानिकता अस्तित्ववादी चेतना तथा आँचलिकता को अभिव्यक्त करता है । इस युग के उपन्यास आधुनिक महाकाव्य कहे गए हैं । अत: इसका अध्ययन आवश्यक है ।

युनीट – १ : गोदान–प्रेमचन्द । — १५ घंटे १४ अंक

- १.१ प्रेमचन्द युगीन उपन्यास ।
- १.२ प्रेमचन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।
- १.३ 'गोदान'कथ्य के परिप्रेक्ष्य में ।
- १.४ 'गोदान' शिल्प के परिप्रेक्ष्य में ।

युनीट – २ : अपने–अपने अजनबी : अज्ञेय । — १५ घंटे १४ अंक

- २.१ मनोवैज्ञानिक एवं अस्तित्ववादी चेतना का परिचय ।
- २.२ अज्ञेय का व्यकितत्व एवं कृतित्व ।
- २.३ 'अपने अपने अजनबी' कथ्य के परिप्रेक्ष्य में ।
- २.४ 'अपने अपने अजनबी' का शिल्प के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन ।

युनीट – ३ : श्रेष्ठ कहानियाँ — १५ घंटे १४ अंक

१. उसने कहा था – चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ।
२. आकाशद्वीप – प्रसाद ।
३. मेहमान – राजेन्द्र यादव ।
४. दाना भूसा – मार्कन्डेय ।
५. बन्द दराजों का साथ – मन्नू भंडारी ।

- ३.१ हिन्दी कहानी : स्वरुप – विकास ।
- ३.२ पाँचो कहानीकारों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।
- ३.३ पाँचो कहानियों का दृष्टि मूलक अध्ययन ।
- ३.४ पाँचो कहानियों का भाषिक संरचनात्मक अध्ययन ।

युनीट – ४ : स–सन्दर्भ व्याख्या । — १५ घंटे १४ अंक

- ४.१ 'गोदान' से व्याख्या
- ४.२ 'अपने–अपने अजनबी' से ससन्दर्भ व्याख्या ।
- ४.३ कहानियों से ससन्दर्भ व्याख्या ।
- ४.४ कहानियों से ससन्दर्भ व्याख्या ।

युनीट – ५ : उक्त पाठ्य वस्तु से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । — १५ घंटे १४ अंक

- ५.१ बहु विकल्प प्रश्न ।
- ५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
- ५.३ सही जोड़ मिलाएँ ।
- ४.४ एक वाक्य में उत्तर ।

आंतरिक मूल्यांकन । ३० अंक

१. स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट) १० अंक
२. कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार) १० अंक
३. आंतरिक सत्रांत परीक्षा १० अंक

पाठ्य पुस्तकें

१. गोदान – प्रेमचंद प्रकाशक : जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
२. अपने अपने अजनबी – अज्ञेय प्रकाशक :
३. श्रेष्ठ कहानियां – डॉ. विश्वपालसिंह प्रकाशक : जयभारती प्रकाशन , इलाहाबाद

संदर्भ ग्रंथ

१. हिन्दी उपन्यास उदभव विकास, सुरेशसिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
२. कहानी– नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
३. नई कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली ।
४. हिन्दी कहानी : स्वरुप संवेदना, राजेन्द्र यादव, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।
५. हिन्दी उपन्यास : शिल्प प्रयोग, त्रिभुवनसिंह, हिन्दी प्रचार समिति, वाराणसी ।
६. अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्प विधि, डॉ. सत्यपाल चुध ।
७. अज्ञेय की उपन्यास यात्रा, डॉ. अरविंदासन, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली ।
८. अस्तित्ववाद और द्वितीय समरोत्तर हिन्दी साहित्य, डॉ. श्याम मिश्र, प्रकाशक : विद्या प्रकाशन मंदिर, दिल्ली ।

प्रश्नपत्र – ३–ए : जन संचार माध्यम लेखन (वैकल्पिक)

प्रतिपाद्य: सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है । हिन्दी भाषा और साहित्य का इन माध्यमों से अधिकाधिक स्तरीय प्रयोग तभी हो सकता है जब इन दृश्य–श्रव्य माध्यमों से संबंधित विद्याओं का व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया जाए। यह पाठ्यक्रम अत्यंत रोज़गार परक है ।

युनीट – १ : जन संचार माध्यम : अर्थ, स्वरुप, संकल्पना । — १५ घंटे १४ अंक

- १.१ जन संचार माध्यम : परिभाषा व अर्थ ।
- १.२ जन संचार माध्यम : संकल्पना व स्वरुप ।
- १.३ जन संचार माध्यम : उदभव – विकास ।
- १.४ संचार माध्यम : उपादेयता ।

युनीट – २ : आधुनिक संचार क्रान्ति । — १५ घंटे १४ अंक

- २.१ आधुनिक संचार माध्यम : अर्थ, स्वरुप ।
- २.२ आधुनिक संचार माध्यमों का आविष्कार ।
- २.३ आधुनिक संचार माध्यमों की तकनीक ।
- २.४ आधुनिक संचार माध्यम जागीर के रुप में ।

युनीट – ३ : मुद्रित संचार माध्यम लेखन — १५ घंटे १४ अंक

- ३.१. मुद्रित संचार माध्यम लेखन की संकल्पना व स्वरुप ।
- ३.२. मुद्रित संचार माध्यमों का भाषिक स्वरुप ।
- ३.३. अखबारों का माध्यम लेखन ।
- ३.४. पत्र–पत्रिकाओं का माध्यम लेखन ।

युनीट – ४ : इलेक्ट्रोनिक संचार माध्यम लेखन । — १५ घंटे १४ अंक

- ४.१ रेडियो संचार माध्यम लेखन
- ४.२ रेडियो संचार माध्यम लेखन की भाषा
- ४.३ टेलीविजन संचार माध्यम का लेखन
- ४.४ टेलीविजन संचार माध्यम की भाषा

युनीट – ५ : उकत पाठ्य वस्तु आधारित वस्तुनिष्ठ प्रश्न । — १५ घंटे १४ अंक

- ५.१ बहु विकल्प प्रश्न ।
- ५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
- ५.३ सही जोड़ मिलाएँ ।
- ५.४ प्रश्न ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

संदर्भ ग्रंथ

१. जनसंचार : विविध आयाम, ब्रजमोहन गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।

२. दृश्य श्रव्य एवं जनसंचार माध्यम, कृष्ण कुमार रत्नू, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर ।

३. संचार माध्यम लेखन, गौरीशंकर रेणा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

४. जन माध्यम और पत्रकारिता, (भाग–२,२) प्रवीण दीक्षित, सहयोगी साहित्य संस्थान, कानपुर ।

५. प्रयोजन मूलक हिन्दी : संरचना और अनुप्रयोग डॉ. रामप्रकाश, डॉ. दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।

६. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता, डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।

प्रश्नपत्र – ४ : हिन्दी भाषा और लिपि

प्रतिपाद्य: राष्ट्रभाषा हिन्दी की भाषा तात्विक संरचना का निर्धारण तथा आंतरिक भाषा प्रकृति का अध्ययन इसका मौलिक प्रयोजन है । हिन्दी भाषा का विकास, आकृतिमूलक वर्गीकरण, लिपियों का उदभव तथा देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं मानक लिपि का अध्ययन इस प्रश्नपत्र का प्रतिपाद्य है ।

युनीट – १ : हिन्दी भाषा : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि । — १५ घंटे १४ अंक

- १.१ प्राचीन आर्य भाषाएँ : वैदिक तथा लौकिक संस्कृत ।
- १.२ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ : पाली, प्राकृत, अपभ्रंश ।
- १.३ आधुनिक आर्य भाषाओं का वर्गीकरण ।
- १.४ हिन्दी भाषा का आकृतिमूलक वर्गीकरण (ज्योर्ज ग्रियर्सन) ।

युनीट – २ : हिन्दी भाषा के विभिन्न स्वरुप । — १५ घंटे १४ अंक

- २.१ राष्ट्रभाषा हिन्दी ।
- २.२ राजभाषा हिन्दी ।
- २.३ संचार भाषा हिन्दी ।
- २.४ साहित्यिक भाषा हिन्दी ।

युनीट – ३ : लिपि : उद्भव और विकास — १५ घंटे १४ अंक

- ३.१ लिपियों का ऐतिहासिक विकासक्रम ।
- ३.२ देवनागरी लिपि का उद्भव – विकास ।
- ३.३ मानक देवनागरी की विशेषताएँ ।
- ३.४ देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, त्रुटियाँ, स्पषटीकरण ।

युनीट – ४ : हिन्दी भाषा की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ । — १५ घंटे १४ अंक

- ४.१ हिन्दी भाषा, उपभाषा, बोली की संकल्पना
- ४.२ पूर्वी व पश्चिमी उपभाषा की बोलियाँ
- ४.३ बिहारी व राजस्थानी उपभाषा की बोलियाँ
- ४.४ पहाडी उपभाषा की बोलियाँ

युनीट – ५ : उक्त पाठ्य वस्तु से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । — १५ घंटे १४ अंक

- ५.१ बहु विकल्प प्रश्न ।
- ५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
- ५.३ सही जोड़ मिलाएँ ।
- ५.४ वस्तुनिष्ठ प्रश्न ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

संदर्भ ग्रंथ :

१. भाषा विज्ञान हिन्दी भाषा और लिपि, रामकिशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
२. भाषा विज्ञान की भूमिका, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।
३. भाषा विज्ञान प्रवेश एवं हिन्दी भाषा, भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली ।
४. भाषा विज्ञान, डॉ. नेमीचन्द्र श्रीमाल, श्रुति पब्लिकेशन्स, जयपुर ।
५. भाषा विज्ञान, राजमल बोरा, के. एल मलिक एन्ड संस प्रा. लि., नई दिल्ली
६. हिन्दी भाषा का उदगम विकास, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ।
७. भारतीय आर्यभाषाएँ और हिन्दी, सुनीति कुमार चेटर्जी ।
८. भारत के भाषा परिवार और हिन्दी भाग – १, २, ३ डॉ. रामविलास शर्मा ।

एम.ए. (हिन्दी)

सेमेस्टर–२

प्रश्नपत्र – ५ : आधुनिक हिन्दी काव्य (छायावादोत्तर कविता)

प्रतिपाद्य: छायावादी कृतित्व में यथार्थ और स्वप्न दोनों की समान संस्थिति थी । राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक जागरण अपनी समस्त शक्ति सामर्थ्य तथा नवीन प्रयोगवादिता के साथ छायावादोत्तर काव्य में विकसित हुई । प्रयोग प्रगतिशीलता के स्वर ने जोर पकडा। औद्योगिकीकरण के साथ–साथ शोषणवृत्ति की सामाजिक विद्रुपता पनपने लगी । इसके परिणाम स्वरुप प्रगतिशील साहित्य आंदोलनों को बढ़ावा मिला । स्वतंत्रता के बाद मोहभंग की स्थिति ने जन्म लिया । स्वप्न अपूर्ण रहें, संकल्प टूटे, आक्रोश और विद्रोह की प्रवृति व्यापक पैमाने पर परिलक्षित हुई । नए – नए बिम्ब, प्रतीक एवं अभिव्यंजना रुप विकसित हुए, मूल्य–विघटन, तनाव, संक्रमण मोह भंग की स्थिति अभिव्यंजित हुई । वर्तमान समस्याएँ वैश्विक संदर्भ में अभिव्यक्त हुई । इस जानकारी हेतु छायावादोत्तर साहित्य का अध्ययन परमावश्यक है ।

युनीट – १ : राष्ट्रीय चेतना की कविता कुरुक्षेत्र, दिनकर । — १५ घंटे १४ अंक

- १.१ रामधारीसिंह दिनकर : व्यक्तित्व – कृतित्व ।
- १.२ 'कुरुक्षेत्र' का स्वरुपगत अध्ययन ।
- १.३ 'कुरुक्षेत्र' का अनुभूतिमूलक अध्ययन ।
- १.४ 'कुरुक्षेत्र' का कलामूलक अध्ययन ।

युनीट – २ : प्रयोगवादी व प्रगतिवादी काव्यधारा । — १५ घंटे १४ अंक

- १. अज्ञेय – २ कविताएँ । — १ –सक्षह ?ज्ञज्ञश्र ळक्ष ज्ञि.ज्ञ।क्ज्ञक्ष
- २. धूमिल – २ कविताएँ । — २ –वुह लज्ञींक्षी वह
- ३. नागार्जून – २ कविताएँ । — १ –शज्ञीहि क्षज्ञश — २ –क्ज्ञज्ञ'ज्ञज्ञ वह क्षज्ञी
- २.१ तीनों कवियों का व्यक्तित्व – कृतित्व । — १ –ींवज्ञू ींज्ञड्क्ष ।श्रवी लज्ञप
- २.२ रचनाओं के प्रयोगवादी – प्रगतिवाद स्वर । — २ –ुही
- २.३ रचनाओं का अनुभूति मूलक अध्ययन ।
- २.४ रचनाओं का अभिव्यक्ति कौशल – कला मूलक अध्ययन ।

युनीट – ३ : 'नई कविता' काव्यधारा । — १५ घंटे १४ अंक

- १. मुकितबोध : २ कविताएँ ।
  १ लकडी का बना रावण २ पूंजीवादी समाजके प्रति
- २. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : २ कव्तिाएँ ।
  १ गरीबी हटाओ २ आंधी पानी आया
- ३. दुष्यंतकुमार : २ कविताएँ ।
  ३.१ कहींपे घूपकी चादर बिछाके बैठ गए ३.२ मौम का धोडा
- ३.१ तीनो कवियोंका व्यकित्व–कृतित्व ।
- ३.२ कविता में नई कविता की मुकतधारा का अध्ययन ।
- ३.३ रचनाओं का अनुभूति मूलक अध्ययन ।
- ३.४ रचनाओं का अभिव्यकित कौशल– कला मूलक अध्ययन।

युनीट – ४ : उक्त रचनाओं से ससन्दर्भ व्याख्याएँ (चार में से दो) । १५ घंटे १४ अंक

४.१ ‘कुरुक्षेत्र’ से ससन्दर्भ व्याख्या ।

४.२ ‘कुरुक्षेत्र’ से ससन्दर्भ व्याख्या ।

४.३ प्रगतिवादी – प्रयोगवादी कविताओं से ससन्दर्भ व्याख्या ।

४.४ नई कविता से ससन्दर्भ व्याख्या ।

युनीट – ५ : उकत पाठ्य वस्तु आधारित वस्तुनिष्ठ प्रश्न । १५ घंटे २० अंक

५.१ बहु विकल्प प्रश्न ।

५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।

५.३ सही जोड़ मिलाएँ ।

५.४ एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

पाठ्य पुस्तकें

१. कुरुक्षेत्र – दिनकर, राजपाल अेन्ड सन्स ,नयी दिल्ली

२. संसद से सड़कतक, धूमिल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

३. नयी कविता की मुक्तधारा (सं.) विद्यानिवास मिश्र राघाकृष्ण प्रकाशन,नयीदिल्ली

४. सदानीरास भाग–१ अज्ञेय,नैशनल पब्लिशिंग हाउस,नयीदिल्ली

संदर्भ ग्रंथ

१. अज्ञेय : एक अध्ययन, डॉ. भोलाभाइ पटेल, हिन्दी साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।

२. हिन्दी की प्रगतिशील कविता के प्रतिमान– मृत्युंजय उपाध्याय, ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली

३. अज्ञेय का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन, प्रो. फूलवंत कौर, भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली

४. नागार्जुन की काव्य साधना, डॉ. जगन्नाथ पंडित

प्रश्नपत्र – ६ : हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

प्रतिपाद्य: औद्योगिक क्रांति के फलस्वरुप आधुनिकता एवम् वैज्ञानिक दृष्टिकोण को व्यक्त करने वाले गद्य साहित्य का आविष्कार हुआ । राष्ट्रीय चेतना को उजागर करने का कार्य निबंध साहित्य ने किया। सामाजिक विद्रुपताओं एवं समस्याओं को नाटक एवं कथाँ साहित्य में अभिव्यकित मिली । फोर्ट विनियम कॉलेज ने गद्य साहित्य के लेखन को प्रोत्साहित किया । परिणाम स्वरुप आधुनिक हिन्दी साहित्य में बंगला के माध्यम से पाश्चात्य साहित्य रुपों का शनै: शनै: आविष्कार हुआ । इसका कालक्रम से प्रवृतिमूलक अध्ययन आधुनिक साहित्येतिहास का प्रतिपाद्य है । नई शती की उत्तर आधुनिकता काव्य सृजनधर्मिता का आयाम बनकर अमिव्यक्त हुई ।

युनीट – १ : आधुनिक युग स्वरुप एवं संकल्पना । — १५ घंटे १४ अंक

१.१ आधुनिक युग समय एवं नामकरण ।
१.२ आधुनिक युग का परिवेश ।
१.३ गुजरात में रचित हिन्दी कथा–साहित्य–(उपन्यास – कहानी) ।
१.४ गुजरात में रचित हिन्दी पद्य (काव्य) ।

युनीट – २ : आधुनिक कविता । — १५ घंटे १४ अंक

२.१. भारतेन्दु युगीन कविता ।
२.२. द्विवेरी युगीन कविता ।
२.३. छायावाद युगीन कविता ।
२.४. छायावादोत्तर कविता ।

युनीट – ३ : आधुनिक युग का गद्य साहित्य । — १५ घंटे १४ अंक

३.१. कहानी प्रारंभ से प्रवर्तमान आन्दोलनो तक ।
३.२. उपन्यास प्रारंभ से प्रवर्तमान प्रमुख स्वर ।
३.३. नाटक प्रारंभ से वर्तमान नाट्य स्वर ।
३.४. एकांकी प्रारंभ से आज के रेडियो व टी.वी. एकांकी तक ।

युनीट – ४ : आधुनिक युग का गद्य साहित्य । — १५ घंटे १४ अंक

४.१. निबंध साहित्य स्वरुप विकास–प्रकार ।
४.२. आत्मकथा तथा जीवनी साहित्य स्वरुप–विकास ।
४.३. रेखाचित व संस्मरण स्वरुप–विकास ।
४.४. व्यंग्य, यात्रावृतांत, मौखिकी खिताबी स्वरुप–विकास ।

युनीट – ५ : उक्त पाठ्य वस्तु से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । — १५ घंटे १४ अंक

५.१ बहु विकल्प प्रश्न ।
५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
५.३ सही जोड़ मिलाएँ ।
५.४ एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

संदर्भ ग्रंथ

१. हिन्दी साहित्य का अतीत भाग: १-२, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी
२. हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं.डो. नगेन्द्र नेशनल पब्लिशींग हाउसी, नई दिल्ली
३. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
४. हिन्दी साहित्य की बीसवीं सदी, नन्द दुलारे बाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
५. भारतेन्दु यात्रा: हिन्दी भाषा की विकास परंपरा, डो. रामविलास शर्मा, नई दिल्ली
६. आधुनिक परिवेश नवलेखन, शिबप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
७. आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृतियाँ, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
८. हिन्दी का सामयिक इतिहास, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्लली
९. हिन्दी साहित्य का प्रवृतिपरक इतिहास, डो. मिश्र, भावना प्रकाशन, दिल्ली
१०. स्वातंत्र्योतर हिन्दी साहित्य का इतिहास, डो. लक्ष्मीसागर वार्ल्गेट, दिल्ली
११. हिन्दी भाषा का विकास, विश्लेषण, रावत चंद्रभानु
१२. डो. अंबाशंकर नागर अभिनन्दन ग्रंथ
१३. डो. रघुनाथ भट्ट अभिनन्दन ग्रंथ
१४. डो. रामकुमार वर्मा अभिनन्दन ग्रंथ
१५ श्री गिरधरलाल सराफ अभिनन्दन ग्रंथ
१६. गुजरात का स्वातंत्र्योतर हिन्दी साहित्य, सं. डो. रघुवीर चौधरी एवं आलोक गुप्त

प्रश्नपत्र – ७ : आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य (नाटक एवं निबन्ध)

प्रतिपाद्य: आधुनिक काल में गद्य साहित्य को अभूतपूर्व सफलता मिली है । यह मानव–मन और मस्तिष्क की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं अनिवार्य माध्यम बन गया है । मनुष्य का राग–विराग, तर्क–वितर्क तथा चिंतन – मनन जिस रागात्मक्ता के साथ कौशलपूर्ण ढंग से गद्य में अभिव्यंजित होता है, वैसा अन्य साहित्यांग में नही । आधुनिक काल में गद्य के विविध रुपों का विकास ईस तथ्य का साक्षी है कि प्रौढ मन–मस्तिष्क की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य में ही संभव है । निबन्ध गद्य का प्रौढ – शक्तिशाली प्रतिरुप, उसकी वैयक्तिक एवं स्वातंत्र्य चेतना का विश्वसनीय प्रतिनिधि है । नाटक, उपन्यास, कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रुप में गद्य साहित्य वामन से विराट बन गया है । आज मनुष्य को उसकी प्रकृति, परिवेश, परिस्थिति तथा चिंतन की विकास प्रक्रिया के साथ सहज प्रामाणिक रुप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है ।

युनीट – १ : प्रसाद युगीन नाट्य साहित्य : चन्द्र गुप्त, जयशंकर प्रसाद । १५ घंटे १४ अंक

१.१ प्रसाद का व्यकित्व एवं कृतित्व ।
१.२ प्रसाद के नाटक : एतिहासिक परिप्रेक्ष्य ।
१.३ ‘चन्द्र गुप्त’ का तात्विक विवेचन ।
१.४ ‘चन्द्र गुप्त’ की मंचन क्षमता ।

युनीट – २ : प्रसादोत्तर नाट्य साहित्य : ‘आधे–अधूरे’, मोहन राकेश । १५ घंटे १४ अंक

२.१ मोहन राकेश : व्यकित्व एवं कृतित्व ।
२.२ आधुनिकता बोध से अनुप्राणित नाटक ‘आधे–अधूरे’ ।
२.३ ‘आधे–अधूरे’ का तात्विक विवेचन ।
२.४ ‘आधे–अधूरे’ की मंचीयता ।

युनीट – ३ : निबन्ध साहित्य : प्रतिनिधि निबन्ध सं. डॉ रणजीत सिंह । १५ घंटे १४ अंक

३.१ कालिदास का भारत – म. प्र. द्विवेदी निबन्ध की विवेचना ।
३.२ कविता ज्ञान है या आनन्द –दिनकर निबन्ध की विवेचना ।
३.३ अन्तरात्मा और पक्षधरता – ग. मा. मुकितबोध निबन्ध की विवेचना ।
३.४ साहित्य का प्रयोजन – डॉ. देवराज निबन्ध की विवेचना ।

युनीट – ४ : ससन्दर्भ व्याख्या । १५ घंटे १४ अंक

४.१ ‘चन्द्र गुप्त’ से ससन्दर्भ व्याख्या
४.२ ‘आधे–अधूरे’ से ससन्दर्भ व्याख्या
४.३ निबन्धों से २ ससन्दर्भ व्याख्या

युनीट – ५ : उक्त पाठयवस्तु से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । १५ घंटे १४ अंक

५.१ बहु विकल्पीय प्रश्न ।
५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
५.३ सही जोड़ मिलाएँ ।
५.४ एक–एक वाकय में उत्तर ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

पाठ्य पुस्तके

१. चन्द्र गुप्त – प्रसाद

२. आधे–अधूरे – मोहन राकेश

३. प्रतिनिधि निबन्ध – डॉ रणजीत सिंह

संदर्भ ग्रंथ

१. प्रसाद के नाटक : डॉ. सिद्धनाथ कुमार, मैक मिलन कंपनी, दिल्ली ।

२. प्रसाद का नाट्य शिल्प, बनवारीलाल हांडा, हिन्दी साहित्य संचार, दिल्ली ।

३. नाटककार जयशंकर प्रसाद, सं. सत्येन्द्र कुमार तनेजा, राधाकृष्ण प्रकाशान, नई दिल्ली।

४. मोहन राकेश : व्यक्तित्व और कृतित्व, सुष्मा अग्रवाल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर ।

५. मोहन राकेश और उनके नाटक, गिरीश रस्तौगी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।

६. आधुनिक नाटक का अग्रदूत मोहन राकेश, गोविन्द चातक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।

७. प्रतिनिधि हिन्दी निबंधकार, डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।

प्रश्नपत्र – ७–ए : प्रयोजनमूलक हिन्दी (वैकल्पिक)

प्रतिपाद्य: मानव जीवन के संपर्क की समस्याएँ दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ी है । अर्थ की महत्ता स्थापित हुई है । धर्म, काम, मोक्ष भी समयानकूल इससे घनिष्ठ रुप से जुड रहे है । इधर रोजगार, व्यावसायिकता, बैंकिंग आदि की प्रयोजन मूलकता काफी बढ़ी है । विविध व्यवहार और व्यापार की चुनौतियों का सामना सैद्धांतिक या साहित्यिक हिन्दी से न होकर प्रयोजन मूलक हिन्दी से ही संभव है । इसके विविध आयामो से न केवल रोजगार या जीविका की समस्या हल होगी अपितु राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा । अत: इसका अध्ययन अपेक्षित है ।

युनीट – १ : प्रयोजनमूलक हिन्दी की संकल्पना व स्वरुप । १५ धंटे १४ अंक

- १.१ प्रयोजनमूलक हिन्दी का अर्थ ।
- १.२ प्रयोजनमूलक हिन्दी और सामान्य हिन्दी का भेद।
- १.३ राजभाषा व राष्ट्रभाषा का भेद
- १.४ संचारभाषा हिन्दी व सम्पर्क भाषा हिन्दी का भेद ।

युनीट – २ : राजभाषा हिन्दी : संवैधानिक स्थिति । १५ धंटे १४ अंक

- २.१ भारतीय विधि अनुच्छेद ३४३ से ३५१ तक की धाराएँ ।
- २.२ राष्ट्रपति के आदेश – सन् १९५२, सन् १९५८, सन् १९५९ ।
- २.३ राजभाषा आयोग सन् १९५५ संसदीय राजभाषा समिति सन् १९५९ ।
- २.४ राजभाषा अधीनयम सन् १९६३, सन् १९६७, सन् १९७६ ।

युनीट – ३ : पारिभाषिक शब्दावली : स्वरुप – विकास का अध्ययन । १५ धंटे १४ अंक

- ३.१ स्वरुप – विकास, शब्दावली अर्थ परिभाषा ।
- ३.२ पारिभाषिक शब्दावली सामान्य विशेषताएँ ।
- ३.३ पारिभाषिक शब्दावली निर्धारण ।
- ३.४ पारिभाषिक शब्दावली का वर्गीकरण।

युनीट – ४ : प्रशासनिक पत्राचार । १५ धंटे १४ अंक

- ४.१ प्रशासनिक पत्राचार का अर्थ एवं स्वरुप
- ४.२ आलेखन, आशय एवं विशेषताएँ
- ४.३ टिप्पण : अर्थ, सामान्य नियम व भेद
- ४.४ प्रशासनिक पत्राचार : विविध प्रकार

युनीट – ५ : उक्त पाठयवस्तु से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । १५ धंटे १४ अंक

- ५.१ बहु विकल्पीय प्रश्न ।
- ५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
- ५.३ सही जोड मिलाएँ ।
- ५.४ एक वाकय में उत्तर दीजिए ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

संदर्भ ग्रंथ

१. प्रयोजन मूलक हिन्दी, विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

२. प्रयोजन मूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग, दंगल आल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

३. हिन्दी विविध व्यवहारों की भाषा, सुवासकुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

४. प्रयोजन मूलक हिन्दी : सिद्धांत और व्यवहार, रघुनंदन प्रसाद शर्मा, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली ।

५. प्रयोजन मूलक हिन्दी प्रक्रिया और स्वरुप डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।

६. प्रयोजन मूलक हिन्दी के विविध रुप, डॉ. राजेन्द्र मिश्र / राकेश शर्मा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।

७. प्रयोजन मूलक हिन्दी : संरचना और अनुप्रयोग, डॉ. रामप्रकाश, डॉ. दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।

प्रश्नपत्र – ८ : भाषा विज्ञान

प्रतिपाद्य: साहित्य आद्यांत एक भाषिक निर्मिति है । साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है । भाषाविज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रुप में भाषिक इकाइयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंत ससंबंधों के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतर्दृष्टि देना है अपितु भाषा–विषयक विवेचन के लिए एक निरुपक भाषा भी प्रदान करता है । भाषावैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरुप, विविधरुपता विषयक जानकारी हिन्दी अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है ।

युनीट – १ : भाषा और विज्ञान का अर्थ एवं स्वरुप । १५ घंटे १४ अंक

१.१. भाषा एवं भाषा विज्ञान की परिभाषा

१.२. भाषा की लाक्षणिकताएँ ।

१.३. भाषा विज्ञान की शाखाएँ ।

१.४. भाषा विज्ञान: अध्ययन की पद्धतियाँ ।

युनीट – २ : स्वन विज्ञान अध्ययन । १५ घंटे १४ अंक

२.१. हिन्दी की स्वनिमिक (स्वनिम) व्यवस्था ।

२.२. स्वनिमों के वर्गीकरण के प्रमुख आधार ।

२.३ हिन्दी के स्वर स्वनिम – वर्गीकरण ।

२.४ हिन्दी के व्यंजन स्वनिम – वर्गीकरण ।

युनीट – ३ : रुप विज्ञान एवं पद विज्ञान अध्ययन । १५ घंटे १४ अंक

३.१. रुप: परिभाषा एवं स्वरुप

३.२. रुप, संरुप, रुपिम की व्यवस्था

३.३ पद: परिभाषा एवं स्वरुप

३.४. पद एवं पदिम की व्यवस्था

युनीट – ४ : वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान एवं कोश विज्ञान अध्ययन । १५ घंटे १४ अंक

४.१. वाक्य: परिभाषा व स्वरूप

४.२. वाक्य के प्रमुख भेद

४.३. अर्थ विज्ञान संकल्पना एवं स्वरुप

४.४. कोश विज्ञान संकल्पना एवं स्वरुप

युनीट – ५ : उकत पाठ्य वस्तु आधारित वस्तुनिष्ठ प्रश्न । १५ घंटे १४ अंक

५.१ बहु विकल्प प्रश्न ।

५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।

५.३ सही जोड़ मिलाएँ ।

५.४ एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

संदर्भ ग्रंथ

१. आधुनिक भाषाज्ञिान, भोलानाथ तिवारी, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली ।
२. हिन्दी भाषा, भोलानाथ तिवारी, किताब महल, ईलाहाबाद ।
३. आधुनिक भाषा विज्ञान, कृपाशंकरसिंह एवं चतुर्भुज सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।
४. भारतीय भाषा विज्ञान की भूमिका, भोलानाथ तिवारी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।
५. ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, जयकुमार जलज, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली ।
६. हिन्दी का सामाजिक संदर्भ, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव एवं रमानाथ सहाय, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ।
७. भाषा शास्त्र की रुपरेखा, उदयनारायण तिवारी, भारती मंडार, ईलाहाबाद ।
८. हिन्दी भाषा का इतिहास, धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेढेमी, ईलाहाबाद ।
९. हिन्दी भाषा संरचना के विविध आयाम, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
१०. हिन्दी भाषा : संदर्भ और संरचना, सूरजभानसिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली ।

एम.ए. (हिन्दी)

सेमेस्टर–३

प्रश्नपत्र – ९ : पूर्व मध्यकालीन हिन्दी काव्य

प्रतिपाद्य: अपने विशिष्ट अवदानों के कारण हिन्दी–साहित्य का भकितकाल 'स्वर्णयुग' के नाम से अधिहित किया जाता है । अपनी पूर्ववर्ती समस्त साहित्यिक परंपरा को पचाकर उसे निखार देने के साथ ही इसे काल न अपना नया स्वर नई पहचान दी और नई–नई उदभावनाएँ मुखरित की । यह लोक–जागरण का काल है । इसमें कबीर, जायसी, सूर, तूलसी जैसे कालजयी महान क्रांतिकारी और लोकधर्मी सर्जको का स्वर एक साथ गंजा । सामाजिक –सांस्कृतिक चेतना संपन्न इने सलग–समर्थ कवियों ने रचनाधर्मिता को गगनचुंबी उँचाई दी । यहाँ जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, उँच–नीच के भेदभाव मिटते नजर आते है और उनकी जगर समन्वर, शांति, सौहार्द, प्रेम, त्याग एवँ करुणो की प्रति स्थापना होती है । साहितय की उदात्तता, पावनता, गंभीरता, भाव प्रवणता और कलात्मकता में यह काल अपनी सानी नहीं रखता । इस काल को जानना पूरी सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा को जानना जुडना है। अत: पूर्व मध्यकालीन काव्य का अध्ययन न केोइ आवश्यक बल्कि प्रासंगिक एवँ अनिवार्य है ।

यूनीट – १ : सूरदास –भ्रमरगीत – सं. रामचन्द्र शुकल (२० पद) । १५ घंटे १४ अंक

- १.१ सूरदास : व्यकित्व, कृतित्व ।
- १.२ भ्रमरगीत परम्परा तथा सूरदास का भ्रमरगीत ।
- १.३ 'भ्रमरगीत' के अनभूति पक्ष का अध्यापन ।
- १.४ 'भ्रमरगीत' के अनभूति पक्ष ।

युनीट – २ : रामचरितमानस (अयोध्याकाण्ड) – तुलसीदास । १५ घंटे १४ अंक

- २.१ तुलसी : व्यकित्व, कृतित्व ।
- २.२ रामचरितमानस के काव्यरुप का अनुशीलन ।
- २.३ अयोध्याकाण्ड अनुभूति पक्ष ।
- २.४ अयोध्याकाण्ड का अभिव्यकित कौशल ।

युनीट – ३ : कबीर एवँ जायसी । (कबीरवाणी –सं. पारसनाथ तिवारी, पदमावत – सं. रामचन्द्र शुकल) १५ घंटे १४ अंक

- ३.१ कबीर–जायसी : व्यकित्व एवँ कृतित्व ।
- ३.२ पदमावत : काव्यरूप, कबीरवाणी का निगुणि पक्ष ।
- ३.३ पदमावत (नागमती विरह –वर्णन) एवँ कबीर वाणी : अनुभूति पक्ष ।
- ३.४ पदमावत एवँ कबीरवाणी का अभिव्यकित पक्ष ।

युनीट – ४ : उक्त चारों कवियोँ की निधारित रचनाओँ से ससन्दर्भ व्याख्या । १५ घंटे १४ अंक

- ४.१ 'अयोध्याकाण्ड' के ससन्दर्भ अध्यापन ।
- ४.२ भ्रमरगीत (प्रथम २० पद) का ससन्दर्भ अध्यापन ।
- ४.३ कबीरवाणी (प्रथम १५ पद) का ससन्दर्भ अध्यापन ।
- ४.४ नागमती विरह–वर्णन का ससन्दर्भ अध्यापन ।

युनीट – ५ : उक्त पाठयवस्तु से वस्तुनिष्ठ अध्ययन । १५ घंटे १४ अंक

५.१ बहु विकल्पीय प्रश्न ।
५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
५.३ सही जोड मिलाएँ ।
५.४ एक वाकय में उत्तर दीजिए ।

आंतरिक मूल्यांकन । ३० अंक

१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

पाठ्य पुस्तकें

१. सूरदास –भ्रमरगीत – सं. रामचन्द्र शुकल
२. रामचरितमानस (अयोध्याकाण्ड) – तुलसीदास ।
३. कबीरवाणी –सं. पारसनाथ तिवारी
४. पदमावत – सं. रामचन्द्र शुकल

संदर्भ ग्रंथ

१. कबीर मीमांसा, रामानंद तिवारी , लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
२. कबीर : व्यकितत्व, कृतित्व और सिद्धान्त डॉ. सरनामसिंह शर्मा, हिन्दी प्रकाशन संस्थान, वाराणसी
३. कबीर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई, दिल्ली
४. गौस्वामी तुलसीदास : व्यकितत्व, दर्शन, साहित्य, डॉ. रामदत्त भारद्वाज, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी,
५. तुलसी काव्य मीमांसा, डॉ. उद्‌यभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
६. तुलसी काव्य : नये पुराने संदर्भ, रामबाबू शर्मा, वाणछ प्रकाशन, दिल्ली
७. सूरदास का काव्य वैभव, डॉ. मुन्शीराम शर्मा रवि प्रकाशन, कानपुर
८. पदमावत, मुन्शीराम शर्मा, रवि प्रकाशन कानपूर
९. जायसी का पदमावत,काव्य और दर्शन, डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
१०. जायसी व्यकितत्व एवं कृतित्व, रामलाल वर्मा

प्रश्नपत्र–१० : विशेष रचनाकारों का अध्ययन

प्रतिपाद्य: समग्र हिन्दी साहित्य में मूर्धन्य सारस्वत और साहित्यकार अपनी सिसृआ की रचनाधर्मिता के स्तर पर परस्पर परिपूरक वितरण में अवस्थित है । इन साहितयकारों ने विविध साहित्यिक विद्याओं के माधयम से राष्ट्रीय स्तर पर समग्र साहित्य की सांस्कृतिक अस्मिता का बोध कराया है । अतएव यहाँ हिन्दी के उन शलाका सारस्वतों का परिचय प्राप्त है जिन्होने सांस्कृतिक विरासत में अपना मूल्यवान अवदान दिया है ।

युनीट – १ : ‘तमस’ – भीष्म साहनी । १५ घंटे १४ अंक

- १.१ भीष्म साहनी का व्यकित्व, कृतित्व ।
- १.२ राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि : तमस ।
- १.३ ‘तमस’ कथ्य के परिप्रेक्ष्य में ।
- १.४ ‘तमस’ की अभिव्यकित कुशलता ।

युनीट – २ : आवारा मसीहा : विष्णु प्रभाकर । १५ घंटे १४ अंक

- २.१ विष्णु प्रभाकर : व्यकित्व, कृतित्व ।
- २.२ जीवनी परम्परा और आवारा मसीहा ।
- २.३ आवारा मसीहा फ कथ्य के परिप्रेक्ष्य में।
- २.४ आवारा मसीहा का कला–कौशल ।

युनीट – ३ : १५ घंटे १४ अंक

- ३.१ ‘ यहअंतनहीं ’ – ओमप्रकाश वाल्मिकी
- ३.२ ठाकुर का कुआ – प्रेमचंद
- ३.३ त्रिशंकु – मन्नूभंडारी

युनीट – ४ : उकत पाठयवस्तु से ससन्दर्भ व्याख्या । १५ घंटे १४ अंक

- ४.१ ‘तमस’ के ससन्दर्भ अध्यापन ।
- ४.२ ‘आवारा मसीहा’ का ससन्दर्भ अध्यापन ।
- ४.३ पठित कहानियों के ससन्दर्भ अध्यापन ।

युनीट – ५ : उकत पाठयवस्तु से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । १५ घंटे १४ अंक

- ५.१ बहु विकल्पीय प्रश्न ।
- ५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
- ५.३ सही जोड मिलाइएँ ।
- ५.४ एक एक पंकित में उत्तर ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

पाठ्य पुस्तकें

१. ‘तमस’ – भीष्म साहनी ।

२. आवारा मसीहा : विष्णु प्रभाकर ।

संदर्भ ग्रंथ

१. उपन्यास : स्थिति और गति, चंद्रकांत बांदिवडेकर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

२. उपन्यास : स्वरुप और संवेदना, राजेन्द्रयादव, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली

३. हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा, रामदास मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

४. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

५. आधूनिक और हिन्दी उपन्यास, इंद्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

६. भीष्म साहनी : व्यकित और रचना, राजेश्वर सकसेना, प्रताप ठाकुर, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली

७. भीष्म साहनी : उपन्यास साहित्य, विवेक द्विवेदी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली

८. हिन्दी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

९. हिन्दी कहानी की विकास प्रक्रिया, डॉ. आनन्द प्रकाश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद

१०. हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ सुरेन्द्र चौधरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रश्नपत्र – १०–ए : अनुसंधान की प्रविधि व प्रक्रिया (वैकल्पिक)

प्रतिपाद्य: विश्वविद्यालयो/शोध संस्थानों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रदेश है शोध कार्य । इस शोध क व्यवस्थित करने एवँ स्तरीयता प्रदान करने के लिए एम. ए. के पाठयक्रम के अंतर्गत शोध प्रविधिदकाद विधिवत प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है । इस पाठयक्रम के अंतर्गत ऐसे पाठय विषयों का समावेश किया जा रहा है जो शोधार्थी के लिए आवश्यक है किन्त जिनका संज्ञान उसे पहले नहीं कराया जा सका है ।

युनीट – १ : अनुसंधान : अर्थ, संकल्पना व स्वरुप । १५ घंटे १४ अंक

१.१ अनुसंधान का अर्थ एवँ परिभाषा ।
१.२ अनुसंधान का संकल्पना व स्वरुप ।
१.३ अनुसंधान के मूल तत्व ।
१.४ अनुसंधान के प्रकार ।

युनीट – २ : अनुसंधान की प्रविधि (योजना) । १५ घंटे १४ अंक

२.१ अनुसंधान का विषम चयन ।
२.२ सामग्री संकल्न : हस्तलेखों का संकलन व उपयोग ।
२.३ अनुसंधान का विभाजन ।
२.४ अनुसंधान अध्याय शीर्षक, उपशीर्षक ।

युनीट – ३ : अनुसंधान प्रक्रिया । १५ घंटे १४ अंक

३.१ आधार ग्रंथ (उपजीन्य) अध्ययन ।
३.२ अनुसंधान : समस्या के सन्दर्भ में सन्दर्भ ग्रन्थों का उपयोग ।
३.३ पत्र – पत्रिकाओं का उपयोग ।
३.४ ज्ञानकोश, शब्दकोश व वेबसाइट का उपयोग ।

युनीट – ४ : साहित्यिक अनुसंधान । १५ घंटे १४ अंक

४.१ ऐतिहासिक तथ्यों व पद्धतियों का उपयोग ।
४.२ समान शास्त्रीय प्रविधि का उपयोग ।
४.३ समसामयिक समस्याओं के सन्दर्भ में साहित्यिक अनुसंधान ।
४.४ साहित्यिक अनुसंधान के सन्दर्भ में विविध विमर्श ।

युनीट – ५ : हिन्दी अनुसंधान से सबद्ध विषयों की भूमिका । १५ घंटे १४ अंक

५.१ पद्य पाठालोचन के सिद्धान्त ।
५.२ गद्य साहित्य का अनुसंधान ।
५.३ शैली वैज्ञानिक अनुसंधान ।
५.४ भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

संदर्भ ग्रंथ

१. अनुसंधान की प्रक्रिया, डॉ. सावित्री सिन्हा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
२. हिन्दी शोधतंत्र की रुपरेखा, डॉ. मनमोहन सहगल, पंचशील प्रकाशन, जयपूर
३. शोध–प्रविधि, डॉ. विनयमोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
४. शोध और सिद्धान्त, डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
५. हिन्दी अनुसंधान के आयाम, डॉ. राजेश्कर, डॉ. वोरा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
६. नवीन शोध–विज्ञान, डॉ. तिलक सिंह, सूर्य प्रकाशन , दिल्ली
७. साहित्यिक शोध : प्रविधि एवँ व्याप्ति, उमा शुकल भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
८. अनुसंधान : प्रविधि और क्षेत्र, राजमल वोरा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
९. शोध – स्वरुप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, बैजनाथ सिंधल, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
१०. हिन्दी अनुसंधान डॉ. विजयपाल सिंह लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

प्रश्नपत्र – ११ : भारतीय काव्य शास्त्र एवँ हिन्दी आलोचना

प्रतिपाद्य: रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समस विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म औ मूल्यवता की वास्तविक परख की जा सके। सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश के साग रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझने और जांचने–परखने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना का अध्ययन आवश्यक है। आलोचना एक ऐसी विद्या है जिसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थी सफल आोैलचकहो सकता है जो हिन्दी पठन–पाठन का मूल प्रयोजन।

युनीट – १ : रस सिद्धान्त एवँ अलंकार सिद्धान्त। — १५ घंटे १४ अंक

- १.१ रस एवँ अलंकार का अर्थ एवँ स्वरुप।
- १.२ रस निष्पत्ति एवँ साधारणीकरण।
- १.३ रस सिद्धान्त के प्रमख आलोचक (लोब्बर, शंकुनी, नायक, अभिनवगुप्त)।
- १.४ अलंकार के प्रकार।

युनीट – २ : रीीत सिद्धान्त व वक्रोन्ति सिद्धान्त। — १५ घंटे १४ अंक

- २.१ रीति व वक्रोन्ति की अवधारणा ।
- २.२ काव्यगण व वक्रोन्ति के भेद।
- २.३ रीति एवँ शैली ।
- २.४ वक्रोन्ति एवँ अभिव्यंजनावाद।

युनीट – ३ : ध्वनि सिद्धान्त व औचित्य सिद्धान्त। — १५ घंटे १४ अंक

- ३.१ ध्वनि एवँ आचित्य की अवधारणा ।
- ३.२ ध्वनि एवँ आचित्य की प्रमुख स्थापनाएँ।
- ३.३ ध्वनि एवँ आचित्य के भेद।
- ३.४ ध्वनि के भेद ।

युनीट – ४ : हिन्दी आलोचना । — १५ घंटे १४ अंक

- ४.१ हिन्दी आलोचना : उद्भव–विकास।
- ४.२ लक्षण ग्रन्थ।
- ४.३ रामचन्द्र शुकल, ह. प्र. द्विवेदी की समालोचना।
- ४.४ रामविलास शर्मा की समालोचना।

युनीट – ५ : उक्त पाठयवस्तु से वस्तुनिष्ठ प्रश्न। — १५ घंटे १४ अंक

- ५.१ बहु विकल्पीय प्रश्न।
- ५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति।
- ५.३ सही जोड मिलाइएँ।
- ५.४ एक एक वाकय में उत्तर।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

संदर्भ ग्रंथ

१. भारतीय काव्यशास्त्र, कृष्णदेव शर्मा विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा
२. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धान्त, डॉ. कृष्णदेव झारी चौखाबां पुस्तक सिरीज, वाराणसी
३. काव्यशास्त्र का : विविध आयाम, मध खराटे, भारतीय ग्रंथ निकेतन नई दिल्ली
४. भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन विश्वंभरनाथ उपाध्याय भारतीय ग्रंथ निकेतन नई दिल्ली
५. भारतीय एवँ पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त, डॉ. गणपतिचन्द्र गप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद
६. भारतीय एवँ पाश्चात्य काव्य की रुपरेखा, डॉ. रामचन्द्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन इलाशबाद
७. हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि, रामचन्द्र तिवारी, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
८. हिन्दी आलोचना के आधार स्तंभ, रामेश्वर खंडेलवाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
९. हिन्दी आलोचना का विकास, नंदकिशोर नवन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
१०. आलोचना और आलोचना, देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
११. आलोचना के रचना पुरुष: नामदर सिंह सं. भारत यावावर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
१२. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रश्नपत्र – १२ : जन संचार माध्यम

प्रतिपाद्य: जनसंचार माध्यम सिमटते विश्व में स्नायु–तंतुओ के समान काम कर रहे हैं, जीवन समाज की धड़कन बन गए हैं । दैनिक समाचार पत्र से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक पत्रिकाओं, प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रोनिक मीडिया, इन्टरनेट आदि में इसका विकसित स्वरुप देखा जा सकता है । इसके बिना आज आदमी रहना कठिन है । साहित्यिकता के साथ–साथ रोजगारपरकता की आकांक्षा की पूर्ति भी इससे होती है । पनर्जागरण, स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व, नारी तथा दलित जागरण में इसकी क्रांतिकारी भूमिका रही है । अत: इसका अध्ययन आज की अनिवार्यता बन गई है ।

युनीट – १ : जन संचार माध्यम की संकल्पना । १५ घंटे १४ अंक

१.१ जन संचार माध्यम का अर्थ एवँ स्वरुप ।
१.२ जन संचार के प्रारंभिक माध्यम ।
१.३ जन संचार के मुद्रित माध्यम ।
१.४ जन संचार के इलेकट्रोनिक माध्यम ।

युनीट – २ : जन संचार के मुद्रित माध्यम । १५ घंटे १४ अंक

२.१ पत्रकारिता : उद्भव–विकास ।
२.२ समाचार पत्रकारिता ।
२.३ पत्र पत्रिका फ उद्भव विकास ।
२.४ हिन्दी की पत्र –पत्रिकाएँ ।

युनीट – ३ : श्रव्य माध्यम । १५ घंटे १४ अंक

३.१ श्रव्य माध्यमका उद्भव–विकास ।
३.२ भारत में आकाशवाणी का उद्भव ।
३.३ संचार माध्यम के रुप में आकाशवाली का योगदान ।
३.४ व्यकितगत संचार के रुप में दूरभाष सेवा ।

युनीट – ४ : इलेकट्रोनिक दृश्य श्रव्य माध्यम । १५ घंटे १४ अंक

४.१ दूरदर्शन का आविष्कार एवँ विकास ।
४.२ भारत में दूरदर्शन का प्रचलन।
४.३ कम्प्यूटर का आविष्कार–विकास ।
४.४ कम्प्यूटर संलग्न संचार सेवाएँ ।

युनीट – ५ : उक्त पाठयक्रम से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । १५ घंटे १४ अंक

५.१ बहु विकल्पीय प्रश्न ।
५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
५.३ सही जोड मिलाएँ ।
५.४ एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

संदर्भ ग्रंथ

१. जनसंचार: विविध आयाम, ब्रजमोहन गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
२. जनसंचार माध्यम, चुनौतियाँ और दायित्व, सं. त्रिभुवनराय, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
३. भाषायी पत्रकारिता और जनसंचार, विष्णु पंकज, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
४. आधनिक जनसंचार और हिन्दी, डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशना, नई दिल्ली
५. संचार क्रांति और हिन्दी पत्रकारिता, अशोक कुमार शर्मा, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
६. जनसंचार माध्यम: भाषा और साहित्य, संधीश पचौरी, नटराज प्रकाशन, दिल्ली
७. संचार माध्यमों से हिन्दी का प्रयोग, डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, साहित्य रत्नालय, कानपुर
८. जनमाध्यम और पत्रकारिता (भाग-१,२), प्रवीण दीक्षित, सहयोगी साहित्य संस्थान, कानपर
९. दृश्य श्रव्य एवं जनसंचार माध्यम, कृष्णकमार रन्, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर

एम.ए. (हिन्दी)

सेमेस्टर– ४

प्रश्नपत्र – १३ : उत्तर मध्यकालीन हिन्दी काव्य

प्रतिपाद्य: जीवन के इहलौकिक पक्ष का संज्ञान भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि परलौकिकता का द्वार यहीं से खुलता है । चार पुरुषार्थो में काम का एक स्तंभ गहरे अर्थ की व्यंजना करता है । जैसे काम और कला घनीभूत भाव से जुड़े है, वैसे ही रति और रीति भी । जहाँ 'रति' मानव हृदय की मूल प्रवृति है, वही 'रीति' उसे मनोवांछित अभिव्यंजना देती है । हिन्दी साहित्य का रीतिकाल इन्ही मनोवृत्तियों से जुड़ा हुआ है, तत्युगीन परिस्थितियों के कारण प्रेम के श्रृंगारिक रुप की संपृक्ति बढ़ी । रसिकता और शास्त्रीयता का सुखद संयोग घटित हआ । जीवन के मधुर पक्ष के साथ ही भक्ति को ठीक से समझने के लिए रीति अथवा श्रृंगार काल का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है ।

युनीट – १ : बिहारी रत्नाकर सं. जगन्नाथ रत्नाकर । — १५ घंटे १४ अंक

- १.१ बिहारी : व्यकितत्व, कृतित्व ।
- १.२ सत्रसई परम्परा में बिहारी रत्नाकर ।
- १.३ बिहारी रत्नाकर का अनुभूति पक्ष ।
- १.४ बिहारी रत्नाकर का अभिव्यकित पक्ष ।

युनीट – २ : रसखान रचनावली : सं. विद्यानिवास मिश्रा । — १५ घंटे १४ अंक

- २.१ रसखान : व्यकितत्व, कृतित्व ।
- २.२ रसखान काव्य में व्यकत भकित भावना ।
- २.३ रसखान रचनावली की अनुभूतियों का अध्यापन ।
- २.४ रसखान रचनावली का अभिव्यकित पक्ष ।

युनीट – ३ : भूषण – संपा. व्रजभूषण सावलिया — १५ घंटे १४ अंक

- ३.१ भूषण : व्यकितत्व, कृतित्व ।
- ३.२ भूषण की राष्ट्रीय चेतना ।
- ३.३ भूषण का अनुभूति पक्ष ।
- ३.४ भूषण का अभिव्यकित पक्ष ।

युनीट – ४ : उकत तीन कवियों के काव्य से ससन्दर्भ व्याख्या । — १५ घंटे १४ अंक

- ४.१ बिहारी रत्नाकर की ससन्दर्भ के हेतु चयनित दोहे ।
  १,१३,२०,३२,३७,३८,५२,६०,८०,९४,१२९,१६१,१८८,२५५,२५६,३००,३४७,३६३,३७७,७१३,
- ४.२ रसखान रचनावली से ससन्दर्भ हेतु चयनित कविताएँ ।
  ३,६,१७,२१,२७,३९,५२,८१,१०३,११६,१२९,१५५,१६८,१९०,२१३,२३७,२४६,२५५,
- ४.३ भूषण काव्य से ससन्दर्भ व्याख्या ।

युनीट – ५ : उक्त पाठयक्रम से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । १५ घंटे १४ अंक

५.१ बहु विकल्पीय प्रश्न ।
५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
५.३ सही जोड मिलाएँ ।
५.४ एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

पाठ्य पुस्तके

१. बिहारी रत्नाकर सं. जगन्नाथ रत्नाकर ।
२. रसखान रचनावली : सं. विद्यानिवास मिश्रा ।
३. भूषण – संपा. व्रजभूषण सावलिया
४. भूषण – ग्रंथावली, डॉ .विजयसिंह,जयभारती प्रकाशन,इलाहाबाद

संदर्भ ग्रंथ

१. हिन्दी रीति साहित्य, डॉ. भगीरथ मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
२. महाकवि भूषण की काव्य भाषा, डॉ. त्रिवेदी और शास्त्री, शब्द और शब्द प्रकाशन, दिल्ली
३. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि, अश्विनी पाराशर, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
४. रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना, डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
५. बिहारी का नया मूल्यांकन, डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
६. हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग–१,२) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
७. रसाखान: आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
८. रसाखान: जीवन और काव्य: डॉ. देवेन्द्र प्रसाद उपाध्याय

प्रश्नपत्र – १४ : विशेष रचनाकारों का अध्ययन

प्रतिपाद्य: हिन्दी के उन कालाजयी रचनाकारों का विशेषाध्ययन करना आवश्यक है जिन्होंने चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान किया है और जिनका लेखन आज भी प्रासंगिक है । यह रचनाकार विभिन्न युगों के उन्नायक और विद्या विशेष के शीर्षस्थ रचनाकार हैं, अस्त इनके समग्र व्यक्तित्व कृतित्व का सघन अध्ययन यहाँ अपेक्षित है ।

युनीट – १ : कोणार्क: जगदीशचन्द्र माथुर — १५ घंटे १४ अंक
- १.१ माथुर: व्यक्तित्व, कृतित्व
- १.२ ऐतिहासिक नाट्य परम्परा व कोणार्क
- १.३ 'कोणार्क' का तात्विक अध्ययन
- १.४ 'कोणार्क' की मंथन–क्षमता

युनीट – २ : अशोक के फूल: ह. प्र. द्विवेदी — १५ घंटे १४ अंक
- २.१ द्विवेदी: व्यक्तित्व, कृतित्व
- २.२ चयनित निबन्धों में व्यक्त दृष्टि
- २.३ चयनित निबन्धों में निरूपित अध्ययन
- २.४ परिनिष्ठित भाषा के सन्दर्भ में चयनित निबन्धों का अध्ययन (चयनित निबन्धों में भाषा परिकार)

युनीट – ३ : श्रृंखला की कड़िया: महादेवी वर्मा — १५ घंटे १४ अंक
- ३.१ महादेवी: व्यकितत्व, कृतित्व ।
- ३.२ चयनित रेखाचित्रों में महादेवी वर्मा की नारी–दृष्टि
- ३.३ नारी – विमर्श एवं महादेवी वर्मा
- ३.४ चयनित रेखाचित्रों की भाषा शैली

युनीट – ४ : उक्त पाठ्य वस्तु से ससन्दर्भ व्याख्या — १५ घंटे १४ अंक
- ४.१ 'कोणार्क' से ससन्दर्भ व्याख्या (२)
- ४.२ चयनित निबन्धों से ससन्दर्भ व्याख्यान (१)
- ४.३ चयनित रेखाचित्रों से ससन्दर्भ व्याख्यान (१)

युनीट – ५ : उक्त पाठयक्रम से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । — १५ घंटे १४ अंक
- ५.१ बहु विकल्पीय प्रश्न ।
- ५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
- ५.३ सही जोड मिलाएँ ।
- ५.४ एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

पाठ्य पुस्तके

१. कोणार्क: जगदीशचन्द्र माथुर

२. अशोक के फूल: ह. प्र. द्विवेदी

३. श्रृंखला की कड़िया: महादेवी वर्मा

संदर्भ ग्रंथ

१. नाटककार जगदीशचन्द्र माथुर, गोदिन्द चातक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

२. हिन्दी नाटक और नाटककार, डॉ. सुरेशचंद्र शरल 'चन्द्र', क. नीलम मसन्द, पुस्तक संस्थान, कानपुर

३. हिन्दी नाटक, डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

४. हिन्दी नाटक – आज–कल, डॉ. जयदेब तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

५. हिन्दी नाटक का विकास, डॉ. गोविंद चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

६. आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी और उनका साहित्य, राजेन्द्र दीक्षित, भारतीय ग्रंथ निकेतन नई दिल्ली

७. हिन्दी निबन्ध का इतिहास, डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

८. हिन्दी निबन्ध के आधार स्तंभ, डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

९. गद्य लेखिका महादेवी वर्मा, योजराज थानी, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली

१०. महादेवी का गद्य, सूर्यप्रकाश दीक्षित, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रश्नपत्र – १४–ए : लघुशोध प्रबन्ध लेखन (वैकल्पिक)

प्रतिपाद्य: इसके अंतर्गत लगभग १०० (सौ) टंकित पृष्ठों का लघु शोध–प्रबंध परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाएगा । विषय का आबंटन हिन्दी विभाग द्वारा किया जाएगा । विभाग ही विशेषत / निर्देशक की व्यवस्था करेगा ।

नोट:

१. अनुस्नातक (हिन्दी) मान्यता प्राप्त शिक्षक अधिकाधिक दो छात्रों को ही लघु शोध प्रबन्ध लेखन हेतु मार्गदर्शन दे पाएँगे ।

२. एम.ए. द्वितीय वर्ष (सत्र–३) के छात्र जो अनसंधान की प्रविधिन प्रक्रिया का प्रश्नपत्र पढ़े चूके हैं उन्हीं को लघु शोध प्रबन्ध लेखन हेतु योग्य समझा जाएगा ।

३. जिन छात्रों ने प्रथम वर्ष के दोनों सत्रों की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है उन्हीं को सत्र–३ का विकल्प पत्र–१० ए और सत्र–४ में प्रश्नपत्र–१४ ए लघु शोध प्रबन्ध लेखन के योग्य समझा जाएगा ।

युनीट – १ :	विषय चयन	१५ घंटे १४ अंक
युनीट – २ :	सामग्री संकलन व उपयोग	१५ घंटे १४ अंक
युनीट – ३ :	लघु शोध प्रबन्ध: छात्रों द्वारा लेखन मार्गदर्शक द्वारा संशोधन व परिष्कार	१५ घंटे १४ अंक
युनीट – ४ :	लघु शोध प्रबन्ध का टंकण, पाठशुद्धि, आदि प्रत्यक्ष मार्गदर्शन	१५ घंटे १४ अंक
युनीट – ५ :	संदर्भ ग्रथों से पादटिप्पण, प्रकरण के अन्त में सूचि तथा लघु शोध प्रबन्ध के अन्त में उपजीव्य ग्रंथ, सन्दर्भ ग्रथ, पत्र पत्रिका ज्ञानकोश, वेबसाइट की सूचि हेत मार्गदर्शन	१५ घंटे १४ अंक

नोट :

१. लघु शोध प्रबन्ध द्वितीय वर्ष के चतुर्थ सत्र के अन्त में सत्रान्त परीक्षा से पूर्व मार्गदर्शक के हस्ताक्षर के साथ दो प्रतियाँ हिन्दी विभागाध्यक्ष द्वारा परीक्षा विभाग में जमा करवायी जाएगी ।

२. एम.ए. द्वितीय वर्ष चतुर्थ सत्र की परीक्षा

३. एम.ए. द्वितीय वर्ष (सत्र–४) की सत्रान्त परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं के साथ इन लघु शोध प्रबन्धों का परीक्षण करवाया जाएगा ।

प्रश्नपत्र – १५ : पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवं विभिन्न वाद

प्रतिपाद्य: साहित्य सृजन और आलोचना, दोनों ही विचारधाराओं और चिंतन पद्धतियों से प्रभावित होते रहे है । ध्यान देने की बात है कि उन्नसवीं – बीसवीं शताब्दी में आकर पश्चिम में विचारधाराओं का पक्ष विशेष रुप से प्रबल हो उठा और उन्हीं के प्रभाव–दबाव में साहित्य और कला के नए आंदोलनो का जन्म हुआ । इन विचारधाराओं और समीक्षा पद्धतियों ने आधुनिक भारतीय साहित्य और समीक्षा को प्रभावित किया । अत: इनकी जानकारी साहित्यशास्त्र के विद्यार्थी के लिए आवश्यक है ।

युनीट – १ : ग्रीक समीक्षक प्लेटो एवं अरस्तू — १५ घंटे १४ अंक

- १.१ प्लेटो एवं अरस्तू व्यक्तित्व कृतित्व
- १.२ प्लेटो के काव्य आरोप
- १.३ अरस्तू का विरेचन सिध्धान्त
- १.४ अरस्तू का अनुकरण सिध्धान्त

युनीट – २ : लोन्जारनस एवं मैथ्यू आर्नाल्ड — १५ घंटे १४ अंक

- २.१ लोन्जारनस का व्यकितत्व कृतित्व
- २.२ लोन्जारनस का उदृात्त की अवधारणा
- २.३ मैथ्यू आर्नाल्ड का व्यक्तित्व कृतित्व
- २.४ मैथ्यू आर्नाल्ड आलोचना का स्वरुप और प्रकार्य

युनीट – ३ : टी. एस इलियट और आई.ए. रिचर्ड्स — १५ घंटे १४ अंक

- ३.१ टी.एस. इलियट का व्यकितत्व कृतित्व
- ३.२ परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा का सिध्धान्त
- ३.३ आई.ए. रिचर्ड्स का व्यक्तित्व कृतित्व
- ३.४ रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन व्यवहारिक आलोचना

युनीट – ४ : पाश्चात्य काव्यशास्त्र विविधवाद — १५ घंटे १४ अंक

- ४.१ स्वच्छन्दतावाद
- ४.२ अभिव्यंजनावाद
- ४.३ अस्तित्ववाद
- ४.४ आधुनिकतावाद

युनीट – ५ : उक्त पाठ्यक्रम से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । — १५ घंटे १४ अंक

- ५.१ बहु विकल्पीय प्रश्न ।
- ५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
- ५.३ सही जोड मिलाएँ ।
- ५.४ एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

संदर्भ ग्रंथ

१. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास, डॉ. नाथ बाली, मॅकमिलन प्रकाशन, मुंबई
२. पाश्यात्य काव्यशास्त्र की परंपरा, डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशींग हाउस, नई दिल्ली
३. पाश्चात्य साहित्य चिंतन, निर्मला जैन, कुसुम बांठिया, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
४. पाश्चात्य काव्यशास्त्र: अधुनातन संदर्भ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
५. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के मानदंड, ले. भाउसाहब परदेशी, भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली
६. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. बच्चन सिंह, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंदीगढ
७. पाश्चात्य काव्य चिंतन, करुणाशंकर उपाध्याय, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रश्नपत्र – १६ : दृश्य–श्रव्य माध्यम में हिन्दी भाषा साहित्य का अनप्रयोग

प्रतिपाद्य: भाषा मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक वस्तु और व्यावहारिक चेतना है जिसके दो मुख्य आयाम या प्रकार्य है – सौन्दर्यपरक और प्रयोजनपरक । भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन–व्यवहार से है और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज–सापेक्ष सेवा माध्यम (सर्विस टुल्स) के रुप में प्रयुक्त होती है । सूचना प्रौद्योगिकी के इस यग में इलैक्ट्रोनिक मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है । हिन्दी भाषा और साहित्य का इन माध्यमों में अधिकाधिक स्तरीय प्रयोग तभी हो सकता है जब इन दृश्य–श्रव्य माध्यमों से संबंधित व्धिाओं का व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया जाए ।

युनीट – १ : जन संचार माध्यमों की भाषा — १५ घंटे १४ अंक

- १.१ आकाशवाणी में हिन्दी भाषा का अनुप्रयोग
- १.२ आकाशवाणी से प्रसारित रेडियो एकाकी का स्वरुप
- १.३ रेडियो एकाकी में भाषा व ध्वनि
- १.४ रेडियो एकाकी के प्रकार

युनीट – २ : दूरदर्शन में हिन्दी भाषा साहित्य का अनुप्रयोग — १५ घंटे १४ अंक

- २.१ दूरदर्शन कार्यक्रम निर्माण एवं भाषा
- २.२ दूरदर्शन समाचार संकलन एवं सम्पादकीय भाषा
- २.३ दूरदर्शन बहुविध कार्यक्रमों में हिन्दी का अनुप्रयोग
- २.४ दूरदर्शन विज्ञप्ति में विज्ञापन की भाषा का स्वरुप

युनीट – ३ : दूरदर्शन धारावाहिक सॉ–ओपेरा में हिन्दी भाषा साहित्य का अनुप्रयोग — १५ घंटे १४ अंक

- ३.१ कहानियों का दूरदर्शन मूलक नाट्य रुपान्तरण व उसकी भाषा
- ३.२ उपन्यासों का दूरदर्शन प्रसारण हेत फिल्मांकन व हिन्दी भाषा का स्वरुप
- ३.३ दस्तावेजी चित्रों का निर्माण एवं हिन्दी भाषा
- ३.४ दूरदर्शन प्रसारण योग्य हिन्दी भाषा आज का स्वरुप

युनीट – ४ : कम्प्यूटर में प्रयुक्त हिन्दी भाषा स्वरुप विकास — १५ घंटे १४ अंक

- ४.१ कम्प्यूटर के हिन्दी की (घएध) बोर्ड एवं विभिन्न फोन्ट (ऋजछढ)
- ४.२ कम्प्यूटर की इन्टरनेट सेवा में हिन्दी भाषा का उपयोग
- ४.३ इन्टरनेट आधारित विविध वेबसाइट में हिन्दी भाषा साहित्य का अनुप्रयोग
- ४.४ कम्प्यूटर के मशीनी अनुवाद की भाषा हिन्दी

युनीट – ५ : उक्त पाठयक्रम से वस्तुनिष्ठ प्रश्न । — १५ घंटे १४ अंक

- ५.१ बहु विकल्पीय प्रश्न ।
- ५.२ रिक्त स्थानों की पूर्ति ।
- ५.३ सही जोड मिलाएँ ।
- ५.४ एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

आंतरिक मूल्यांकन ।		३० अंक
१.	स्वाध्याय (असाइन्मेन्ट)	१० अंक
२.	कक्षामें प्रस्तुति (सेमीनार)	१० अंक
३.	आंतरिक सत्रांत परीक्षा	१० अंक

संदर्भ ग्रंथ

१. दृश्य–श्रव्य माध्यम लेखन, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, ईशिता मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
२. मीडिया और प्रसारण, डॉ. रमेश मेहरा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
३. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता, हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
४. मीडिया लेखन के सिद्धांत, एन. सी. पंत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
५. संचार माध्यम लेखन, गौरीशंकर रेणा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
६. टेलीविजन समीक्षा: सिद्धान्त और व्यवहार, सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
७. पटकथा लेखन: एक परिचन, मनोहर श्याम जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
८. टेलीविजन लेखन: असगर वजाहत, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
९. रेडियो वार्ता शिल्प, डॉ. सिद्धनाथ कमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
१०. कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग, विजय कमार मल्होत्रा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
११. समाचार एवं प्रारुप लेखन, डॉ. राम प्रकाश, डॉ. गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
१२. दूरदर्शन: हिन्दी के प्रयोजनमूलक विविध प्रयोग, कृष्णकमार सर, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
१३. कम्प्यूटर और हिन्दी, डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली